Title: Till 7 years she was declared blind

Edition: Navbharat Times (Page-03) Date: 10th Dec 2014

LASER EYE SURGERY CENTRE
Leaders in Advanced Solutions for Eyesight Rejuvenation

7 सालों तक परिजन मान रहे थे छाया को नेत्रहीन

■ **वरिष्ठ संवाददाता, मुंबई : नेत्रहीन बच्चों के** स्कूल में लगभग ढाई साल रहने वाली छाया के परिवार ने उसे अंधा मान कर सतारा के गांव से लाकर इस अस्पताल में भर्ती करा दिया था। उन्होंने यह मान लिया था कि 7 साल की छाया अब जीवन में कभी नहीं देख पाएगी। लेकिन एक साल पहले नवंबर में इसी स्कूल में लगे डॉक्टरों के एक आई कैंप ने छाया की जिंदगी में रोशनी ला दी। एक प्राइवेट आई क्लीनिक के माध्यम से दादर स्थित कमला मेहता नेत्रहीन स्कूल में लगे कैंप में इस स्कूल में लगभग 160 बच्चियों का आईचेकअप किया गया। इसी चेकअप के दौरान डॉक्टरों ने छाया की जांच की, जो जन्मजात मोतियाबिंद की शिकार थी। जांच में यह सामने आया कि छाया को बच्चों में की जाने वाली मोतियाबिंद सर्जरी के बाद छाया की आंखों की रोशनी वापस आने की संभावना है।

▸ पिछले साल नवंबर में हुआ था जन्मजात मोतियाबिंद की शिकार छाया का ऑपरेशन

▸ परिजनों ने अंधा मानकर कराया था इस बच्ची को नेत्रहीन स्कूल में भर्ती

अपनी बेहद खराब दृष्टि और चीजों को सही तरह से पहचान न पाने के कारण इस बच्ची को परिवार वालों ने अंधामानकर नेत्रहीन स्कूल में पढ़ाना शुरू कर दिया था। 7 साल की छाया की दोनों आंखों पर यह सर्जरी करने वाले डॉ. नितिन डेडिया का कहना है कि बच्चों में जन्मजात मोतियाबिंद के लगभग 0.4% मामले सामने आते हैं। ऐसे मामलों में आंखों का सामान्य लेंस धुंधला हो जाता है, जिसके चलते बच्चे साफ देख नहीं पाते। ऐसे में बच्चों के इस धुंधले लेंस को हटाने के लिए सर्जरी की जरूरत होती है, लेकिन हर बार सर्जरी की जरूरत हो, यह जरूरी नहीं। 160 बच्चों में से हमने 10-12 बच्चियों को देखा जिनमें दृष्टि विकास की संभावना थी। इनमें से सिर्फ छाया थी, जिसपर हमने सर्जरी की, जबकि बाकी बच्चियों को ड्रॉप और मेडिकल ट्रीटमेंट दिया था। डॉ डेडिया बताते हैं कि सर्जरी के बाद शुरुआती 3 से 4 महीनों में छाया लेजी आई सिंड्रोम से जूझ रही थी, जिसकी वजह से उसे आंखों की रोशनी आने क बाद भी वह चीजों को छू कर देखती और पहचानती थी। जन्म से नेत्रहीन होने के चलते उसने बचपन से ही चीजों को सिर्फ छू कर ही महसूस किया था।